1

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देवो देवानमसि। ऋग्वेद 1/94/13

हे परमात्मन् ! तू देवों का देव है तू महादेव है।

O God ! you are the Lord of lords.

वर्ष 39, अंक 27 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 9 मई, 2016 से रविवार 15 मई, 2016
विक्रमी सम्वत् 2073 सृष्टि सम्वत् 1960853117
दयानन्दाब्द: 192 वार्षिक शुल्क: 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक सम्पन्न : भावी योजनाओं हेतु अनेक प्रस्ताव पारित

विश्व पर्यावरण दिवस पर दिल्ली में 1000 स्थानों पर यज्ञ कराने का लक्ष्य निर्धारित

आर्यजनों, आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं से सहयोग की अपील

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के पुरोहित एवं सेवक महानुभावों की एक दिवसीय पूर्णकालिक कार्यशाला आयोजित की जाएंगी। पुरोहित कार्यशाला 17 जुलाई को प्रात: 10:45 बजे से 6 बजे तक एवं सेवक कार्यशाला 24 जुलाई प्रात: 10:45 बजे से सायं 6 बजे तक संपन्न होगी। गोष्ठी स्थल की सूचना समस्त पुरोहितों एवं सेवक महानुभावों को यथा शीघ्र पत्र द्वारा दी जाएगी।

यज्ञ मेले (यज्ञोत्सव) का 2 अक्तूबर को होगा आयोजन

आर्य पुरोहित कार्यशाला 17 जुलाई, प्रात: 10:45 से 6 बजे

आर्य समाज सेवक कार्यशाला 24 जुलाई, प्रात: 10:45 से 6 बजे

विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून के अवसर पर दिल्ली में 1000 विभिन्न स्थानों पर यज्ञ कार्यक्रम का एक ही समय आयोजन किया जाएगा। समस्त आर्य समाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं अन्य सहयोगी संस्थाओं के पदाधिकारियों से निवेदन है कि अपने क्षेत्र में अधिकाधिक स्थानों पर यज्ञ का आयोजन करें एवं अपने स्थान, यज्ञ संयोजक के नाम, मोबाईल नम्बर की सूची श्री ओम प्रकाश आर्य जी (मुख्य संयोजक मो. 9540077858) को लिखवा दे अथवा aryasabha@yahoo.com ईमेल/पत्र द्वारा भेज दें।

पर्यावरण दिवस पर दिल्ली में 1000 स्थानों पर यज्ञ कार्यक्रम।

मृतकों के अन्तिम संस्कार पर लिए चादर/ शाल के स्थान पर देशी घी व हवन सामग्री अर्पित करने का संकल्प

मंत्र पाठ कक्षा एवं व्यावहारिक संस्कृत प्रशिक्षण कक्षा का शुभारंभ कर दिया गया है। सभी प्रशिक्षुओं को 12 कक्षाओं के उपरांत प्रमाण पत्र सभा की ओर से जारी किए जाएंगे।

सभा की ओर से यज्ञ प्रशिक्षण कक्षाएं आरंभ की जा रही हैं जिनमें प्रशिक्षुओं को एक सप्ताह के यज्ञ प्रशिक्षण के उपरांत प्रमाण पत्र दिए जाएंगे। इस प्रशिक्षण में प्रशिक्षित महानुभावों का सहयोग विश्व पर्यावरण दिवस पर आयोजित यज्ञों में विशेष रूप से किया जा सकेगा। दिनांक 9 से 15 मई तक दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर आर्य समाज कीर्ति नगर एवं आर्य समाज सागरपुर में होंगी एक-एक सप्ताह की कक्षाएं।

यज्ञ प्रशिक्षण कक्षाएं आरम्भ 9 मई से दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर, 15 मई से आर्य समाज कीर्ति नगर एवं 6 जून से आर्य समाज सागरपुर में होंगी एक-एक सप्ताह की कक्षाएं।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के अवसर पर प्रत्येक आर्य समाज 1-2 घण्टे योगाभ्यास अथवा अन्य कोई आयोजन अपनी आर्यसमाज में अथवा बाहर सार्वजनिक स्थान पर बैनर लगाकर अवश्य करें।

अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून के अवसर पर 1-2 घण्टे योगाभ्यास अथवा अन्य कोई आयोजन अवश्य करें।

यज्ञ सामग्री सुविधा केन्द्र की स्थापना

आर्य समाज ए-ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली में यज्ञ सामग्री सुविधा केन्द्र की स्थापना 5 जून से सभी सुविधाएं उपलब्ध होंगी

आर्य समाज ए-ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली में 5 जून से सभी सुविधाएं कार्यरत होंगी। यहां सभी औषधियां, वनस्पतियां, यज्ञ पात्र, हवन कुण्ड, आसन, बत्तियां तथा अन्य उपयोगी सामान प्राप्त किया ...शेष पेज 7 पर

भवन रहित आर्य समाजों- आर्य समाज जहांगीरपुरी, हौज खास, दुर्गा पार्क, किरण गार्डन, विकास नगर के भवन इस वर्ष निर्माण करने के होंगे प्रयास।

विभिन्न मतों में पाप-पुण्य को लेकर मान्यताओं की तुलना -डॉ. विवेक आर्य

जब मनुष्य पाप करने वाली वृत्तियों को वश में कर लेता है तब मनुष्य सुखी हो जाता है। मनुष्य का चित्त शांत और संतुष्ट हो जाता है। ऋग्वेद 1/18/9/1 में कुटिलता को, उलटे कर्म को पाप कहा गया है। इसलिए जब तक कुटिलता रहती है तब तक मनुष्य भद्र नहीं बन सकता है।

1. ईसाइयत- हर व्यक्ति जन्म से पापी है क्योंकि सृष्टि के आदि में हव्वा (Eve) और आदम (Adam) ने बाइबिल के ईश्वर के आदेश की अवमानना की थी। इसलिए ईश्वर ने हव्वा को शाप देकर पापी करार दिया था। इस पाप से बचाने वाला केवल एक मात्र ईसा मसीह है क्योंकि वह पापों को क्षमा करने वाला है। इसलिए केवल ईसा मसीह पर विश्वास करने वाला ही स्वर्ग का अधिकारी होगा। इसलिए ईसा मसीह को मानो और अपने पापों से मुक्ति प्राप्त करो क्योंकि केवल ईसा मसीह ही मुक्ति प्रदाता है। पापों को करने से रोकने के स्थान पर ईसा मसीह पर विश्वास को अधिक महत्त्व दिया गया है। यह मान्यता एक पाखण्ड के समान दिखती है कि अगर कोई व्यक्ति कोई भी पाप कर्म न करे मगर ईसा मसीह पर विश्वास न करे तो भी वह नरक में जायेगा क्योंकि वह जन्म से पापी है।

2. इस्लाम- पाप न करने के लिए कुछ आयतों के माध्यम से सन्देश अवश्य दिया गया है। मगर पाप को न करने से अधिक महत्त्व इस्लाम की मान्यताओं को दिया गया हैं। मुस्लिम समाज के लिए आचरण से अधिक महत्त्वपूर्ण मान्यताएं हैं। जैसे बकरीद के दिन निर्दोष पशुओं की हत्या करना उनके लिए पाप नहीं है क्योंकि यह इस्लामिक मान्यता है जैसे जिहाद के नाम पर निर्दोषों को मारना भी पाप नहीं है, अपितु पुण्य का कार्य है क्योंकि इसके परिणाम स्वरुप जन्नत और हूरों के ...शेष पेज 5 पर

धवस्त किए गए आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी (निकट बाड़ा हिन्दूराव) के

नव निर्मित भवन का उद्घाटन समारोह

रविवार दिनांक 15 मई, 2016 | यज्ञ : सायं 4 :30 बजे | उद्घाटन : 5:30 बजे

आपको विदित ही है कि गत वर्ष 16 मई, 2015 को आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी गिरा दिया गया था, जिसको पुन: स्थापित करने की मांग को लेकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं विभिन्न आर्य समाजों द्वारा संयुक्त रूप से धरना-प्रदर्शन किया गया था। आर्य समाज को पुन: स्थापित करने के लिए आर्य समाज भवन का पुनरुद्धार कार्य आरम्भ किया गया और एक साल के अन्दर ही इस आर्यसमाज का नया भवन बनकर तैयार हो गया है।

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाएं तथा संगठन शक्ति का परिचय दें

निवेदक

धर्मपाल आर्य	अरुण प्रकाश वर्मा	सुभाष कोहली	कीर्ति शर्मा	वागीश आर्य	अमरनाथ गोगिया	आदर्श कुमार
प्रधान	9540086759	9540021717	9810169736	9810068474	प्रधान	मन्त्री, 9811440502

दिल्ली आ.प्र.सभा — आर्यसमाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी पुनर्निर्माण समिति — आर्यसमाज मॉडल बस्ती शीदीपुरा

पहुंचने का मार्ग :- डी.सी.एम. चौक से गौशाला रोड पर चलकर पहले गेट से अन्दर आर्यसमाज पहुंचे।

स्वाध्याय — अश्वारोही बनो

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मि सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः। तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितः तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।। -अ. 19/53/1

ऋषिः-**भृगुः**।। देवता-**कालः**।। छन्दः-**त्रिष्टुप्**।।

विनय - कालरूपी महाबली घोड़ा चल रहा है। यह सब संसार को खींचे लिये जा रहा है। इस विश्व के सब प्रकार के जगतों में सात तत्त्व काम कर रहे हैं (सब जगतों मे सात लोक, सात भूमियां हैं, सप्त प्रकार की सृष्टि है और प्रत्येक प्राणी में भी सात प्राण, सात ज्ञान और सात धातु हैं)। ये ही सात रस्सियां (रश्मियां) हैं, जिनसे यह विश्व उस कालरूपी घोड़े से जुड़ा हुआ है। काल की महाशक्ति से जुड़कर इस ब्रह्माण्ड के सब भुवन, सब लोक, सब मनुष्य, सब प्राणी, सब उत्पन्न वस्तुएं चक्र की भांति घूम रही हैं। इन असंख्य भुवनों में, उत्पन्न चर या अचर पदार्थो के असंख्यात अक्षों (व्यक्ति-केन्द्रो) को गति देता हुआ, यह महाशक्ति काल अपने इन भुवन-चक्रों द्वारा इस समस्त विश्व को चला रहा है। इस प्रकार यह संसार न जाने कब से चलाया जा रहा है! हम परम तुच्छ मनुष्यों की क्या गणना, असंख्यों वर्षो की आयुवाले बहुत-से सौर-मण्डल भी जीर्ण होकर सदा से इस अनन्तकाल में लीन होते गये हैं, परन्तु कभी जीर्ण न होता हुआ यह कालदेव आज भी अपनी उसी और उतनी ही शक्ति से इस विश्व-ब्रह्माण्ड को खींचे लिये जा रहा है। इस कालदेव को मेरे कोटि-कोटि प्रणाम हैं। भाइयों! क्या तुम्हें यह कभी जीर्ण न होने वाला, सब विश्व को चलाने वाला महावीर्य अश्व दीख रहा है? याद रक्सो इस महावेगवान् अश्व की सवारी वे ही ले-सकते है। जो ज्ञानी हैं-जो समय को पहचानते हैं, जिनकी दृष्टि इस सबको हिलाने वाले अनन्त कालदेव के दर्शन पाकर विशाल हो गई है, अतएव जो क्रान्तदर्शी है। जो विशाल भूत और भविष्य को दूरतक देख रहे हैं, जो अज्ञानी या अतिचञ्चल मनुष्य, स्थिर ज्ञान-प्रकाश को न पाकर क्षुद्र दृष्टि वाले और काल के महत्त्व को न पहचानने वाले हैं, वे तो काल-रथ पर नहीं चढ़ सकते और न चढ़ सकने के कारण वे या तो कुचले जाते हैं, या कुछ दूर तक घिसटते जाकर कहीं इधर-उधर दूर जा पड़ते हैं और मार्ग भ्रष्ट हो जाते हैं। इसके नीचे यूं ही पड़े रहकर नष्ट हो जाते हैं, इसीलिए काल नाम मृत्यु का हो गया है, परन्तु वास्तव में काल तो वह महाशक्ति वाला, महावेगवाला यान है, जिस पर सवार होकर हम बड़ी जल्दी अपना मार्ग तय करक`लक्ष्य पर पहुंच सकते हैं, अतः आओ, हम आज से काल के सवार बनें, अपेन पल-पल, क्षण-क्षण का सदा सदुपयोग करें, इस महाशक्ति को कभी भी गंवाएं नहीं और काल की इस विशालता को देखते हुए सदा ऊंची-विशाल दृष्टि से ही समय के अनुसार अपना कर्त्तव्य निश्चय किया करें।

शब्दार्थ-सप्तरश्मिः= सात रस्सियों वाला **सहस्राक्षः**= हज़ारों धुरों को चलाने वाला **अजरः**= कभी भी जीर्ण, बुड्ढा न होने वाला **भूरिरेताः**= महाबली कालः **अश्वः**= समयरूपी घोड़ा **वहति**= चल रहा है= संसार= रथ को खींच रहा है। **विश्वा भुवनानि**= सब उत्पन्न वस्तुएं, सब भुवन **तस्य**= उसके **चक्राः**= चक्र हैं-उस द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। तम्=उस घोड़े पर **विपश्चितः**= ज्ञानी और **कवयः**= क्रान्तदर्शी लोग ही **आरोहन्ति**=सवार होते हैं।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय — भारत से सबक ले यूरोप

यूरोपीय देशों की सीमा पर बैठे सीरियाई शरणार्थियों की किसी मुस्लिम देश को सुध नहीं है। उन्हें शरण देने वाले यूरोपीय देश भी अब और किसी प्रकार का खतरा मोल लेने से हिचक रहे हैं। शायद तभी बेल्जियम के उपप्रधानमंत्री यान जंबन ने अपनी चिंता जाहिर की है। उन्होंने कहा है कि यूरोप में ब्रसेल्स हमले के बाद इस्लाम के प्रति लोगों की भावना बदली है और इस्लाम को लेकर नफरत भरे बयानों में भी तेजी आई है। जंबन के अनुसार यूरोप में जबरदस्त धार्मिक संतुलन बिगड़ने वाला है। इस स्थिति में आज जरूरत है कि हमें मुस्लिमों को आतंकवादियों के पाले में जाने से रोकना होगा। क्योंकि ब्रसेल्स हमले के बाद मुस्लिम समुदाय के लोग डांस कर रहे थे जबकि इस हमले में 32 लोग मारे गये थे। जंबन ने कहा यदि ऐसा है, तो आने वाले कुछ वर्षो में समस्त यूरोप के सामने समस्या खड़ी हो सकती है। यूरोप, जो पहले ही आर्थिक संकट से गुजर रहा है यदि वहां धीरे-धीरे धार्मिक संतुलन भी बिगड़ गया तो यूरोप की स्थिति दयनीय होकर सीरिया, यमन, तुर्की जैसी होने में देर नहीं लगेगी।

यह कहना गलत नहीं होगा कि यूरोप को ऐसी स्थिति में भारत से कुछ सीख लेनी चाहिए। भारत ने भी बांग्लादेश गठन के बाद लाखों की संख्या में बांग्लादेशी शरणार्थियों को भावनात्मक रूप से शरण दी थी जो पूर्वोत्तर राज्यों में आकर बस गये थे। जिसके बाद पूर्वोत्तर राज्यों में तेजी से धार्मिक संतुलन बिगड़कर स्थानीय लोगों के अन्दर शरणार्थियों के प्रति गुस्सा जन्म लेने लगा; जिसके कारण पूर्वोत्तर राज्यों खासकर असम में आतंकवाद पनपकर भारत के अन्दर प्रभाव दिखाने लगा है। शायद आने वाले कुछ वर्षो के बाद यूरोपीय देशों में भी कुछ ऐसा ही हाल देखने को मिले! आशंका से मुंह मोड़ने के बजाय यह बात तय है कि अगले दस वर्ष तय कर देंगे कि यूरोप और पूरे विश्व के हालात भविष्य में कैसे होंगे? ज्ञात हो सीरियाई संकट के समय खुद मुस्लिम देशों के द्वार बन्द होने के बाद सीरियाई और इराकी शरणार्थी यूरोप के देशों में जाकर बस गये थे। उनमें सबसे अधिक 90 हजार जर्मनी, 60 हजार से ऊपर स्वीडन गये थे। सितम्बर 2015 तक हर रोज 8 हजार शरणार्थियों ने यूरोपीय देशों में पलायन किया था। इस सबके बाद जेहन में जो प्रश्न उपजते हैं वे ये हैं, कि यदि इस्लाम की विचारधारा उपयुक्त है, तो इन लोगों के सामने इस्लामिक लोगों ने ही यह हालात क्यों खड़े किये? दूसरा जब इस्लामिक मौलाना इस्लाम की विचारधारा को सबसे श्रेष्ठ बताते हैं तो फिर वे इस्लाम की आलोचना से तिलमिला क्यों जाते हैं? क्या उन्हें भय है कि इस मजहब के जन्म से ही केवल हिंसा, धमकी, प्रतिबंध झेल रहे लोग इससे दूर न हो जाये? तो फिर ऐसी कमजोर विचारधारा में बंधे रहने से क्या लाभ है? इस्लामिक आतंक की वजह से जिन इस्लाम के मानने वालों का घरबार छिना हो, वे आज दर-दर की ठोकर खाने को मजबूर हो तो फिर यह लोग इस विचारधारा में जकड़े क्यों हैं? या फिर यूरोप में इस्लाम का फैलाव करने की यह सुनियोजित साजिश का हिस्सा है?

इंग्लैंड के समाचार पत्र संडे एक्सप्रेस ने पिछले दिनों इस्लामिक स्टेट का हवाला देकर खबर छापी थी कि इस्लामिक स्टेट ने करीब 4 हजार आतंकियों को यूरोपीय देशों में भेजने का दावा किया है, खबर के बाद लिखा था ''थोड़ा इंतजार करो।'' जिसके बाद जर्मनी में चर्च और स्कूलों में तोड़-फोड़ की घटना, दान-पात्र और लैपटॉप लुटने की घटना से लेकर नये साल का आगमन कर रही 100 के करीब स्थानीय युवतियां रेप का शिकार हुई थीं। इन घटनाओं में जो लोग गिरफ्तार हुए थे उनमें से एक ने यू-ट्यूब पर अपना वीडियो जारी कर शरणार्थी शिविर में रह लोगों से इस मुहिम में जुड़ने का आग्रह किया था। हालाँकि किसी घटना को पसंद या नापसंद करने की किसी भी देश की अपनी इच्छा पर निर्भर करता है। किसे स्वीकार करे और किसे अस्वीकार इस फैसले पर भी अंतिम अधिकार उनका होता है। लेकिन मानवता के नाते हम लोग अभी भी दुनिया में शांति, प्रेम और भाईचारा ''सर्वेभवन्तु सुखिनः'' कायम रखने की बात करते हैं। हमारा मकसद किसी मजहब को बदनाम करना नहीं है। किन्तु दुनिया में रहने के नाते कुछ प्रश्न पूछने का अधिकार तो रखते हैं क्योंकि मुस्लिम मौलाना जब तक आतंक के प्रति अपनी जुबान नहीं खोलेंगे, तब तक आतंक का दानव दुनिया में तबाही जारी रखेगा। आज आतंक की काली छाया धीरे-धीरे यूरोप को निगलने चली है, इसके बाद अमेरिका और अमेरिका के बाद शायद यह छाया दुनिया से मानवता का उजाला हमेशा के लिए नष्ट न कर दे। सोचो! जो लोग आज अपनों के सीने में खंजर भोंक रहे हैं वे कल गैर के लिए कितने घातक होंगे?

-सम्पादकीय

प्रेरक प्रसंग — आर्यों की देवी व देवता

स्वामी वेदानन्दजी तीर्थ जब खेड़ाखुर्द (दिल्ली) का गुरुकुल चलाते थे तो सहदेव नाम का एक गठीला, परन्तु जड़बुद्धि युवक उनके पास रहता था। ब्रह्मचारी में कई गुण भी थे। ब्रह्मचारी में गुरुभक्ति का भाव बहुत था और व्यायाम की सनक थी।

गुरुकुल के पास एक धनिक कुम्भकार रहता था। उसे स्वामी वेदानन्दजी से बड़ी चिढ़ थी। चिढ़ का कारण यह था कि वह समझता था कि आर्यसमाजी देवी-देवताओं को नहीं मानते। स्वामीजी चाहते थे कि इस व्यक्ति को आर्यसमाजी बनाया जाए, यह बड़ा उपयोगी सिद्ध होगा। जब ब्रह्मचारी भिक्षा के लिए निकलते तो यह कभी भी किसी को कुछ भी भिक्षा न देता। उसका एक ही रोष था कि आर्यलोग देवी-देवताओं को नहीं मानते। स्वामी वेदानन्दजी उसे बताते कि माता, पिता, गुरु, आचार्य, अतिथि आदि देव हैं, परन्तु ये बातें उसकी समझ में न आतीं।

एक दिन ब्र. सहदेव भिक्षा के लिए निकला। उसी धनिक कुम्भकार के यहाँ गया। उसने अपना प्रश्न दोहरा कर भिक्षा देने से इन्कार कर दिया। ब्रह्मचारी ने कहा, ''आर्यलोग भी देवी-देवताओं को मानते हैं।''

उसने कहा, स्वामी दयानन्दजी का लिखा दिखाओ। ब्रह्मचारी जी ने वैदिक सन्ध्या आगे करते हुए कहा, यह पढ़ो क्या लिखा है? 'ओ३म् शन्नो देवी' दिखाकर ब्र. ने कहा देख 'देवी' शब्द यहाँ है कि नहीं। फिर उसने संस्कार-विधि से देवयज्ञ दिखाया तो वहाँ 'विश्वानि देव' पढ़कर वह धनिक दंग रह गया। उसने कहा, ''मुझे तो आज ही पता चला कि आर्यसमाज 'शन्नो देवी' तथा 'विश्वानि देव' को मानता है, परन्तु स्वामी वेदानन्दजी ने मुझे क्यों नहीं बतलाया?''

इस घटना के पश्चात् वह व्यक्ति दृढ़ आर्य बन गया। स्वामीजी का श्रद्धालु तथा गुरुकुल का सहायक बन गया।+

यही ब्रह्मचारी अब स्वामी अग्निदेवभीष्म के नाम से देशभर में वेदप्रचार के लिए घूमता है। इन्हें सहस्त्रों प्रमाण कण्ठस्थ हैं। यह सूझ व लगन की बात है कि जो बात वेदज्ञ वेदानन्दजी महाराज को न सूझी, एक साधारण ब्रह्मचारी को सूझ गई और एक व्यक्ति का जीवन बदल गया।

साभार : तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

उपरोक्त पुस्तक वैदिक प्रकाशन में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें- वैदिक प्रकाशन, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001 मो. 09540040339

"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" पर तमाचा!!

51 फीसदी महिलाओं का मानना है कि सार्वजनिक स्थानों पर रोजाना फब्तियों का शिकार होना आमबात है। ऐसा नहीं है कि इन घटनाओं को अंजाम देने वाले कोई बाहरी लोग है सब इसी देश के लोग हैं। आखिर हमारे समाज में पनपने वाली यह बीमारी कहाँ से पैदा हुई क्या इसमें काफी हद तक सिनेमा का योगदान नहीं माना जाना चाहिए? जब फिल्म में नायिका को नायक छेड़ता है तो पूरा सिनेमाहाल तालियों सीटियों से गूंज उठता है इसका क्या मतलब है?

इतिहास में नारी के सफर की बात न करो, बस हमें अगला कदम रखने के लिए जमीन दे दो। शायद यह बोल रेवाड़ी के सुमाखेड़ा और कतोपुरी गाँवों की वे 50 के करीब बेटियां बोल रही होंगी जिन्होंने छेड़छाड़ और युवकों की अश्लील हरकतों से स्कूल जाना छोड़ दिया। जिनमें दो लड़कियां राज्य स्तरीय कबड्डी खिलाड़ी भी शामिल हैं। लड़कियों के अभिभावकों का आरोप है कि उनकी बच्चियों के साथ पड़ोस के लाला गाँव के लड़के आये दिन छेड़छाड़ करते हैं। 18 अप्रैल को कक्षा 9 में पढ़ने वाली एक छात्रा को लाला गाँव के ही एक व्यक्ति ने उसके साथ दुष्कर्म किया था। इसके बाद पंचायत ने लाला गाँव का सामाजिक बहिष्कार कर दिया था। लेकिन घटना यहीं नहीं थमी, तीन रोज पहले जाटूसाना स्कूल से लौट रही छात्रा के सामने नदी में नहा रहे युवकों द्वारा अपने कपड़े उतारने की अश्लील हरकतों की बात सामने आई। जब इस बारे में लड़कियों से पूछा गया तो वे रोने लगीं। इन हरकतों पर गुस्साए लोगों ने लड़कियों को लाला गाँव भेजना बंद कर दिया। इस घटना के बाद क्या हम कह सकते हैं कि हरियाणा से शुरू हुई "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ" की मुहिम हरियाणा में ही दम तोड़ती नजर आ रही है। शिक्षा का अधिकार मांग रही इन बच्चियों की आवाज क्या हरियाणा सरकार सुनेगी? आजाद भारत में बच्चियों को स्कूल छोड़ के घर बैठना पड़े इसलिए कि गुंडे छेड़खानी करते हैं, इससे शर्मनाक क्या होगा? क्या ये बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ पर तमाचा नहीं है?

यह पहली घटना नहीं है। इससे पहले उत्तर प्रदेश के बरेली में करीब 400 बच्चियों ने स्कूल जाना तब छोड़ दिया था जब वे मासूम स्कूल जाने के लिए तख्तों के सहारे नदी पार करती थीं और ठीक उसी समय नदी में नहाने के बहाने कुछ लड़के अश्लील इशारे करते उन्हें गलियां बकते। लड़कियां इतनी छोटी थी कि वे सही से बोल भी नहीं पा रही थीं। हमने 3 अगस्त 2015 को आर्य सन्देश के 38 वें अंक में इस मुद्दे को जोर शोर से उठाया था। हमने तब भी महिला आयोग को प्रश्नचिह्न करते हुए लिखा था कि आखिर ऐसे मौकों पर महिला आयोग खामोश क्यों पाया जाता है? दिसम्बर 2012 में दिल्ली के बसंत विहार इलाके में निर्भया कांड के बाद लगा था कि कुछ बदलेगा, समाज की सोच में कुछ परिवर्तन होगा, राह चलती बच्चियों को देखने का नजरिया बदलेगा पर क्या हुआ? केरल में फिर एक छात्रा को निर्भया बना दिया गया। 28 अप्रैल को एर्नाकुलम जिले के पेरूम्बवूर में गरीब परिवार से ताल्लुक रखने वाली कानून की इस छात्रा से उसके ही घर में बलात्कार किया गया और उस पर धारदार हथियार से नृशंक वार किया गया एवं उसकी हत्या कर दी गई। बताया जा रहा है कि महिला पर 20 बार चाकुओं से हमला किया गया। महिला के निजी अंगों पर ही हमला किया गया। महिला की आंतें बाहर आ गई थीं। 4 साल बीत गये वे ही समाज है वही सोच और वही राजनेता; जो इन सवेदनशील मुद्दों पर सिर्फ राजनीति करते दिखाई देते हैं जिस कारण आज देश में हर 26 वें मिनट में एक लड़की या महिला छेड़खानी का शिकार हो जाती है। यदि बात राजधानी दिल्ली की करें तो यहाँ तो हर 25 वें मिनट पर छेड़खानी की वारदात सामने आती है। 51 फीसदी महिलाओं का मानना है कि सार्वजनिक स्थानों पर रोजाना फब्तियों का शिकार होना आम बात है। ऐसा नहीं है कि इन घटनाओं को अंजाम देने वाले कोई बाहरी लोग है, सब इसी देश के लोग हैं। आखिर हमारे समाज में पनपने वाली यह बीमारी कहाँ से पैदा हुई क्या इसमें काफी हद तक सिनेमा का योगदान नहीं माना जाना चाहिए? जब फिल्म में नायिका को नायक छेड़ता है तो पूरा सिनेमाहाल तालियों व सीटियों से गूंज उठता है, इसका क्या मतलब है? यही कि यह एक नैतिक कार्य है, हमें नायक की हरकत पर कतई आपत्ति नहीं है। क्या ऐसे चित्रण से युवा सोच प्रभावित नहीं होती? क्योंकि कई बार मनचले भी फिल्मी अंदाज में छेड़खानी करते दिखाई देते हैं। आज समाज के साथ फिल्मी मानसिकता में भी बदलाव जरूरी हो गया है।

यह सब सहना एक बेटी के लिए दिन पर दिन बड़ा मुश्किल सा होता जा रहा है। अक्सर देश के लोग अच्छे संस्कारों की बात कर अपना पल्ला झाड़ते दिखाई देते हैं। हमेशा बेटी को ही जिम्मेदार ठहराया जाता है। जिस तरह निर्भया कांड के बाद आरोपी मुकेश ने कहा था कि लड़कियां बाहर जाएंगी तो छेड़खानी तो होगी ही। मुलायम सिंह यादव ने रेप जैसे घिनौने कृत्य पर कहा था कि लड़कों से गलती हो जाती है; तो क्या हम ये मान लें कि सब जिम्मेदारी लड़कियों की ही है, क्या लड़की के रूप में पैदा होना पाप हो गया है? हमारी वैदिक संस्कृति तो ऐसी नहीं थी फिर आज यह सब क्या हुआ। आज एक बेटी अपने सम्मान से लेकर परिवार और समाज तक की चुनौती का सामना करती दिखाई दे रही है। आधुनिक भारतीय समाज में नारी के प्रति बढ़ती हिंसा को लेकर भारत दुनिया के निशाने पर है। दिल्ली निर्भया कांड हो, उबर कैब कांड या फिर बदायूं जैसे अपराध पर संयुक्त राष्ट्र भी चिंता जता चुका है। बदायूं कांड विदेशी मीडिया की सुर्खियां बन चुका है। अब विदेशी मीडिया भारत में घटती इस तरह की घटनाओं में अपना बाजार तलाश रहा है। अब महिलाओं की सुरक्षा पर खाली चिंता जाहिर करने से कुछ नहीं होगा। समाज को इन असामाजिक तत्त्वों का सामना करना होगा। मेरी बेटी उसकी बेटी का भेद भूलकर हम सबकी बेटी है, नारा देना होगा। यदि आज बेटी सुरक्षित नहीं है, तो कल देश का भविष्य भी असुक्षित ही होगा।

-राजीव चौधरी

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

-Priyavrata Das

Jangida, the Plant of Protection

"Uttering the name of the resplendent Lord, the seers have given the Jangida, out of which from the very beginning, the enlightened ones have prepared a medicinal remedy, what is known as remover of splitting pain is shoulders."

"May the Jangida make powerless the crushing pain of lumbago, the bursting pain of arthrites, as well as the consumptive cough and the disease of the ribs known as pleurisy and the fever affecting every autumn."

"Me from sky, me from earth, me from midspace, me from plants, me from the present and me from the future, from each and every quarter, may the Jangida, protect me all through".

इन्द्रस्य नाम गृह्णन्त ऋषयो जंगिडं ददुः।

देवा यं चक्रुर्भेषजमग्रे विष्कन्धदूषणम्।। (Av.xix.35.1)

Indrasya nama grhnanta rsayo jangidam daduh.

deva yam cakrurbhesajamagre viskandhadusanam..

आशरीकं विशरीकं बलासं पृष्ट्यामयम्।

तक्मानं विश्वशारदमरसां जङ्गिडस्करत्।।(Av.xix.34.10)

Asarikam visarikam balasam prstyamayam.

takmanam visvasaradamarasam jangidaskarat..

परि मा दिविः परि मा पृथिव्याः पर्यन्तरिक्षात्परि मा बीरुद्भ्यः।

परि मा भूतात्परि मोत भव्याद्दिशोदिशो जंगिडः पात्वस्मान्।।(Av.xix.35.4)

Pari ma divah pari ma prthivyah paryantariksatpari ma birudbhyah.

pari ma bhutatpari mota bhavyadvisodiso jangidah patvasman..

Medicine to Get a Male child

Chapter VI, hymn II has two verses that indicate treatment of a woman to obtain a son. The first verse says, Asvattha (holy fig tree) mounted on a Sami (mimosa sunsa) when administered to a woman helps in begetting a son and thus, male birth is assured.

The five ingredients: orrt, bark, leaf, flower and fruit of the holy fig tree mounted on a Sami tree are powdered and administered with milk to a woman. This strengthens retention of a male child in her womb. The pregnant woman shall live a disciplined lifewith sublime thoughts.

Chapter IV, hymn 4 prescibes herbs by name Vrsamedha, asva, rsabha to enrich the semen of the husband : "O medicinal herb, we dig you that heips in erecting of penis. May you put in the man the potency of the medicinal plant " Vusa" which has the strength of bulls and the virility of men."

शमीमश्वत्थ आरूढस्तत्र पुंसुवनं कृतम्।

तद्वै पुत्रस्य वेदनं तत्स्त्रीष्वा भरामसि।।(Av.iv.11.1)

Samimasvatha arudhastatra punsuvanam krtam.

tadvai putrasya vedanam tatstrisva bharamasi..

Peari Shell

"with you the pearl shell, who are foremost among the glittering ones, and who are born from the ocean, having killed the germs, we over-power, the flesh-eating worms, the devourers."

"We banish disease as well as ignorance with pearl shell, With pearl shell, we banish the perpetual bewailers. The pearl shell is all healing panacea for us. May the pearl protect us from evil."

"The pearl jewel is born from the ocean as the sun is born from the covering cloud. May that jewel protect us from all sides from the weapons of the enlightened ones and of the evil ones."

यो अगृतो रोचनानां समुद्रादधि जज्ञिषे।

शंखेन हत्वा रक्षांस्यत्त्रिणो वि षहामहे।। (Av.iv.10.2)

Yo agrato rocananam samudradadhi jajnise.

sankhena hatva raksansyattrino vi sahamahe..

शंखेनामीवाममतिं शंखेनोत सदान्वाः

शखो नो विश्वभेषजः कृशनः पात्वंहसः।।(Av.iv.10.3)

Sankhenamivamamatim sankhenota sadanvah.

sarikho no visvabhesajah krsanah patvamhasah..

समुद्राज्जातो मणिर्वृत्राजातो दिवाकरः।

सो अस्मान्त्सर्वतः पातु हेत्या देवासुरेभ्यः।।(Av.iv.10.5)

Samudrajjato manirvrtramjato divakarah.

so asmantsarvatah patu hetya devasurebhyah..

To Be Continue...

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत प्रशिक्षण कक्षाएं आरंभ

यज्ञ प्रशिक्षण कक्षा 9 मई से 15 मई दयानन्द आदर्श विद्यालय तिलक नगर, नई दिल्ली में संबोधित करते श्री विनय आर्य जी एवं प्रशिक्षण प्राप्त करते विद्यालय के विद्यार्थीगण एवं अध्यापिकाएं।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में आर्य समाज जनकपुरी सी ब्लॉक, पंखा रोड, नई दिल्ली में आरंभ की गई मंत्र पाठ कक्षा में मंत्रोच्चारण सिखाते आचार्य प्रणवदेव शास्त्री।

गुरु विरजानन्द संस्कृतकुलम आर्य समाज एल ब्लॉक आनन्द विहार हरि नगर नई दिल्ली में संचालित व्यावहारिक संस्कृतिक प्रशिक्षण कक्षा के उद्घाटन समारोह में संबोधित करते श्री विनय आर्य जी, साथ में हैं धनंज्य शास्त्री।

अमर बलिदानों की जयंती एवं पुण्य स्मृति में कार्यक्रम आयोजित

आर्य समाज रामनगर रूड़की, आर्य समाज मार्ग जिला हरिद्वार (उत्तराखंड) में देश के अमर बलिदानों की जयंती एवं पुण्य स्मृति में 6 मार्च 2016 को आर्य मुसाफिर पं. लेखराम जी, 23 मार्च 2016 को सरदार भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव, डॉ. श्यामजी कृष्ण वर्मा की स्मृति में शांति महायज्ञ व 7 मार्च 2016 को महर्षि दयानन्द जी, मुनिवर गुरूदत्त विद्यार्थी के जन्म पर स्वास्तिक महायज्ञ और मंगल पांडेय की स्मृति में शांति महायज्ञ का आयोजन वर्ष 2016 के माह मार्च-अप्रैल को संपन्न कराया गया।

बर्मा में प्रधानमंत्री को वैदिक साहित्य भेंट

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की म्यांमार (बर्मा) यात्रा के दौरान आर्य समाज यागून (रंगून) के मंत्री श्री बृजेश गुप्ता तथा अन्य अधिकारियों ने वैदिक साहित्य भेंट किया।

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद मेरा जीवन ही बदल गया

मैं रघुनाथ आर्य जिला मथुरा, तहसील छाता, ग्राम कादोंना का रहने वाला एक किसान हूं। मैं बचपन से पौराणिक विचारधारा को मानने वाला था। एक दिन मैं आर्य समाज कोसीकलां के वार्षिकोत्सव के अवसर पर अपने मित्र श्री बाल किशन आर्य के साथ गया। वहां आर्य विद्वानों के भजन व उपदेश सुने जिससे मुझे आर्य समाज के प्रति वास्तविक आस्था जागी। पहले बाल किशन जी मुझे आर्य समाज के वारे में बतलाया करते थे लेकिन मैं उसमें विश्वास नहीं करता था। लेकिन जब मैंने उक्त समारोह में विद्वानों के प्रवचनों को सुना तो जैसे मैं होश में आ गया और मैंने उत्सुकता वश कुछ विद्वानों से इस विषय में और जानकारी प्राप्त करनी चाही। जिसके बाद एक भजनोपदेशक आचार्य जी से कुछ भजन गाना सीखे और मैंने महर्षि दयानन्द जी द्वारा रचित सत्यार्थ प्रकाश का भी अध्ययन किया जिसे पढ़ने के बाद मेरा जीवन एक दम से बदल गया। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अभी तक अंधकार में जी रहा था। अब मुझे जीने की एक नई व सही राह नज़र आ रही थी। मैंने उसी दिन से भजनों को गाना शुरू कर दिया और मैंने पूर्णत: संन्यास धारण कर लिया है। अब मेरा नाम आत्मानन्द सरस्वती है। मैंने दयानन्द जी की प्रेरणा से उनके पद चिह्नों पर चलने का संकल्प ले लिया है। अब मैं अपने क्षेत्र में आर्य समाज के प्रचारार्थ भजन गाता हूं और उपदेश करता हूं। मेरा सम्पूर्ण जीवन वैदिक सिद्धान्तों में ही ढल चुका है। मैं अपने मित्र बाल किशन आर्य के साथ अनेक स्थानों पर जा-जाकर महर्षि दयानन्द जी के विचारों को लोगों विशेष कर युवाओं तक पहुंचाने का प्रयास कर रहा हूं।

-आत्मानन्द सरस्वती, जिला मथुरा

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/ विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ -'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इस स्तम्भ निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा। -संपादक

अपने बच्चों को उनके जन्मदिन पर दें

ऐतिहासिक जानकारी से भरपूर चित्रकथाएं

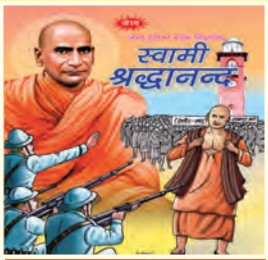

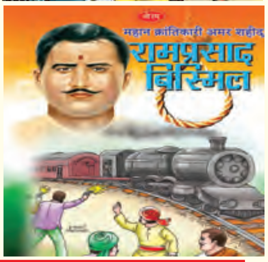

मूल्य प्रति कॉमिक्स 30/-

पृष्ठ 1 का शेष

विभिन्न धर्मों में ...

भोग की प्राप्ति होगी। कुरान के ईश्वर अल्लाह से अधिक महत्त्वपूर्ण पैगम्बर मुहम्मद साहिब प्रतीत होते हैं। यह मान्यता है, यह विश्वास है। इस्लाम में पाप-पुण्य कर्म से अधिक मान्यताओं को महत्त्व उसे धर्म नहीं अपितु मत सिद्ध करता है।

3. वेदों में मनुष्य और ईश्वर के मध्य न कोई मुक्तिदाता है, न कोई मध्यस्थ है। मनुष्य और ईश्वर का सीधा सम्बन्ध है। मान्यता या विश्वास से अधिक सत्यता एवं यथार्थ को महत्त्व दिया गया है। सम्पूर्ण वेदों में अनेक मंत्र मनुष्य को पाप कर्म न करने एवं केवल पुण्य कर्म करने का सन्देश देते हैं। वेद पाप क्षमा होना नहीं मानता क्योंकि कर्मफल सिद्धांत के अनुसार जो जैसा कर्म करेगा वैसा फल प्राप्त करेगा। पाप क्षमा होने से मनुष्य कभी पाप क्षमा करना नहीं छोड़ेगा अपितु भय मुक्त होकर और अधिक पापी बनेगा। वेद मनुष्य को पाप कर्मो का त्याग करने के लिए संकल्प करने का सन्देश देते हैं। संकल्प को प्रबल बनाने के लिए वेद ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना कर आध्यात्मिक उन्नति करने का विधान बताते हैं। मनुष्य जितनी-जितनी उन्नति करता जायेगा, उतना-उतना पाप आचरण से विमुख होता जायेगा। जिससे उसके कर्म पुण्य मार्ग को प्रशस्त करेंगे। वैदिक विचारधारा में मनुष्य के कर्म सर्वोपरि है न कि मान्यता, विश्वास अथवा मध्यस्था। व्यवहारिक, क्रियात्मक एवं प्रयोगात्मक दृष्टि से केवल वेदों की कर्मफल व्यावस्था सत्य के सबसे निकट है।

वेद में पाप निवारण के लिए अनेक मंत्र दिए गए हैं जिनमें मनुष्य ईश्वर से ऐसी मति, ऐसी बुद्धि प्रदान करने की प्रार्थना करता है जिससे वह केवल और केवल सत्य मार्ग पर चलता रहे और पाप कर्म से सर्वथा दूर रहे। मनुष्य इन मन्त्रों का अनुष्ठान करते हुए यह संकल्प लेता है कि वह पाप कर्म से सदा दूर रहेगा।

आइये, इन मन्त्रों को ग्रहण कर, उनका चिंतन मनन कर, उन्हें अपने जीवन में शाश्वत करें जिससे हमारा जीवन सफल हो जाये।

1. प्राणी जगत का रक्षक, प्रकृष्ट ज्ञान वाला प्रभु हमें पाप से छुड़ाये- अथर्ववेद 4/23/1

2. हे सर्वव्यापक प्रभु जैसे मनुष्य नौका द्वारा नदी को पार कर जाते हैं वैसे ही आप हमें द्वेषरूपी नदी से पार कीजिये। हमारा पाप हमसे पृथक होकर दग्ध हो जाये- अथर्ववेद 4/33/7

3. हे ज्ञानस्वरुप परमेश्वर हम विद्वान तेरे ही बन जाएँ। हमारा पाप तेरी कृपा से सर्वथा नष्ट कर दे- ऋग्वेद 1/97/41

4. हे मित्रावरुणो अर्थात् अध्यापकों उपदेशकों आपके नेतृत्व में अर्थात् आपकी कृपा से गड्ढे की तरह गिराने वाले पापों से मैं सर्वथा दूर हो जाऊं- ऋग्वेद 2/27/5

5. हे ज्ञानस्वरूप प्रभु आप हमें अज्ञान से दूर रख कर हमारे पाप को दूर करो- ऋग्वेद 4/11/6

6. इस शुद्ध- बुद्धि से हम भगवान के भक्त बनें और पाप से बिलकुल परे चले जाएँ- ऋग्वेद 7/15/13

7. हे प्रभु तू पाप से हमारी रक्षा कर , पाप की कामना करने वाले व्यक्ति से भी दिन रात निरंतर हमारी रक्षा कर - ऋग्वेद 7/15/15

8. हे मित्रा वरुणो आपके बताये हुए सत्य मार्ग से चलकर नौका से नदी की तरह पाप रूपी नदी को तैर जाएँ- ऋग्वेद 7/65/3

9. हे सर्वज्ञ प्रभु आप मेरी सदा रक्षा करें। मुझे कभी पाप की इच्छा रखने वाले दुष्ट बुद्धि वाले मनुष्य की संगति में मत पड़ने दें- ऋग्वेद 8/71/7

10. निष्पापता की उत्सुकता इन सभी मन्त्रों में प्रकट की गयी है। प्रभु का सर्वव्यापकता तथा सर्वज्ञान गुण पाप दूर करने में सहायक होता है। सर्वव्यापक प्रभु हमारे द्वारा कहीं भी किये गए पाप कर्म को जान लेते हैं और यह प्रभु की न्याय व्यस्था ही है कि किसी भी मनुष्य द्वारा किया गया पाप कर्म उसे दण्डित करने का हेतु बनता है। जो जैसा करेगा वैसा भरेगा का सिद्धांत स्पष्ट रूप से ईश्वर की कर्म फल व्यवस्था को सिद्ध करता है। मनुष्य कर्म करने के लिए स्वतंत्र है और उसका फल पाने के लिए परतंत्र है, परतंत्रता का अर्थ ईश्वर का गुलाम अथवा मनुष्य द्वारा किये जाने वाले कर्मो में बाध्यता नहीं है अपितु पुण्य कर्म का फल सुख और पाप कर्म का फल दु:ख है। इसलिए वेद भगवान अपने सन्देश द्वारा समस्त मानव जाति को पाप कर्म से दूर रहने का सन्देश दे रहे हैं।

11. हे प्रभु! आप सर्वव्यापक और सर्वज्ञाता है। आपकी सर्वव्यापकता तथा सर्वज्ञता को जानकर हम कभी पाप में प्रवृत्त न हों- ऋग्वेद 1/17/8

12. हे ज्ञान के स्वामिन! जिसकी तुम रक्षा करते हो उसके पास कहीं से भी पाप नहीं फटक सकता और न दु:ख आ सकता हैं- ऋग्वेद 2/23/5

पाप निवारण के उपाय हैं: पाप वृति को वशीभूत करने से, दृढ संकल्प से, यज्ञ से, सत्य संकल्प करने से, पापों में दोष दर्शन से और पापों के त्याग की कामना पाप निवारण के उपाय हैं।

वेद भगवान बड़े ही आत्मीय शब्दों में पाप निवारण के उपाय बताते हैं-

1. **पाप वृत्ति को वशीभूत करना :** हे पाप! मुझे छोड़ दे, हमारे वशीभूत होकर , हमको सुखी कर। कुटिलता से अलग करके हमें कल्याण और सुख के लोक में स्थापित कर। अथर्ववेद 6/26/1

सत्य है कि जब मनुष्य पाप करने वाली वृत्तियों को वश में कर लेता है तब मनुष्य सुखी हो जाता है। मनुष्य का चित्त शांत और संतुष्ट हो जाता है। ऋग्वेद 1/189/1 में कुटिलता को, उलटे कर्म को पाप कहा गया है। इसलिए जब तक कुटिलता रहती है तब तक मनुष्य भद्र नहीं बन सकता है। मनुष्य को अंतत: अपने मन को स्वाभाविक सरल अवस्था में रखना भी पापों से छूटने का उपाय है। इसके लिखे मन को कुटिलता से पृथक करके पापवृत्ति को वशीभूत करना होगा।

2. **दृढ संकल्प से:** हे पाप! जो तू हमें नहीं छोड़ता है तब हम ही तुझे छोड़ देते हैं- अथर्ववेद 6/26/2

दृढ संकल्प के द्वारा हम अपने मन को पाप कर्म से दूर करें। अगर मन को पक्का कर सत्य मार्ग पार चलेगे तभी पाप से विमुख रहेगे।

3. **यज्ञ से :** मेरे जो किये हुए यज्ञ-देवपूजन, सत्संग और दान हैं , वे मुझे प्राप्त रहें. मेरे मन का संकल्प सत्य हो. मैं किसी भी पाप को न प्राप्त होऊं। इस विषय में सब देव मेरी पूर्ण रक्षा करें- अथर्ववेद 5/3/4

वेद के इस मंत्र में स्पष्ट है कि मनुष्य अपने सत्कर्मो में सदा लगा रहे और सत्य का संकल्प कर पाप कर्मो से दूर रहे। इसका अर्थ स्पष्ट है कि मनुष्य अपने मन को श्रेष्ठ कर्मो में इतना लीन कर ले कि उसके पास पाप कर्म करने का समय ही न हो।

स्वामी दयानंद के जीवन में भी इस प्रकार का एक उदाहरण हमें मिलता है। किसी व्यक्ति ने उनसे पूछा कि महाराज क्या आपको वासना नहीं सताती। स्वामी दयानंद ने उत्तर दिया कि समय ही नहीं मिलता। स्वामी जी का सम्पूर्ण जीवन यज्ञमय और श्रेष्ठ कर्मो को पूर्ण करने में व्यस्त था, इसलिए वे पाप कर्म से बचते गए और अंत में सर्वश्रेष्ठ सुख मोक्ष के भागी बने। इस मंत्र को स्वामी दयानंद ने साक्षात् रूप से अपने जीवन में आत्मसात कर लिया था।

4. **पापों में दोष दर्शन से और पापों की कामना का त्याग :** हे मानसिक पाप ! दूर हट जा,तू क्यों अप्रस्त ? कामों की प्रशंसा करता है। दूर चला जा, मैं तुझे नहीं चाहता- अथर्ववेद 6/45/1

पाप तीन प्रकार के होते हैं- मानसिक, शारीरिक और वाचिक। शारीरिक और वाचिक पापों की उत्पत्ति मानसिक पापों के द्वारा ही होती हैं। यदि मन में कोई पाप नहीं है तो वाणी और शरीर द्वारा भी कोई पाप नहीं होगा। दूर चला जा, मैं तुझे नहीं चाहता -इस प्रकार के वाक्यों से व्यक्त रूप में या मानसिक रूप में पाप के विरुद्ध दृढ़ भावना पैदा होती है। इस प्रकार यदि कोई व्यक्ति पापों के विरुद्ध लगातार वाचिक और मानसिक अभ्यास करेगा तो वह अवश्य ही उन पर विजय पा लेगा। इस प्रकार अभ्यासी के मन में पापों के लिए घृणा पैदा होती है। अत: प्रत्येक मनुष्य को इस प्रकार का अभ्यास कर पापों की कामना का त्याग करना चाहिए।

पाप निवारण का फल : वेद भगवान अथर्ववेद 16/6/1 में कहते हैं- हम आज ही पाप रहित हो गए हैं. हम आज ही विजय कर लेंगे और सुख, शांति और आनंद का भोग करेंगे।

आइये अंग्रेजी भाषा में एक proverb gS fd prevention is always better than cure अर्थात् बचाव ईलाज से हमेशा उत्तम हैं। दु:ख, अशान्ति आदि से बचने के लिए एक मात्र उपाय ईश्वर प्रदत्त मार्ग पर चलते हुए पाप कर्मो से दूर रहना है। वेद भगवान का सन्देश अपने जीवन में आत्मसात कर ही ऐसा संभव है।

करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों

जगत गुरु ऋषि दयानन्द की, शिक्षाओं को मानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।
जगत गुरु ऋषि दयानन्द थे, ईश्वर भक्त निराले।
वेदों के विद्वान धुरन्धर, देश भक्त मतवाले।।
बाल ब्रह्मचारी तपधारी, सन्त अजब थे त्यागी।
शीलवन्त गुणवान, तार्किक थे अद्‌भुत वैरागी।।
जी वे मात्र के हित चिन्तक को ठीक तरह तुम जानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।
वेद ज्ञान को भूल गई थी, बिल्कुल दुनिया सारी।
अंधकार में भटक रहे थे, दुनियां के नर-नारी।।
चेतन की पूजा तज दी थी, जड़ पूजा थी जारी।
लाखों गउएं रोजाना, जग में जाती थीं मारी।।
पढ़ो सभी इतिहास पुराना, ठान गलत मत ठानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।
देव पुरुष ने कृपा की थी, सकल विश्व पर भारी।
कर्म प्रधान बताया ऋषि ने समझाए नर-नारी।।
तजो बुराई, करो भलाई बनकर परोपकारी।
छुआ-छूत की ऊंच-नीच की दूर करो बीमारी।।
ऋषि ने गउ को माता बताया, तुम भी माता मानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।
भारत था परतंत्र, जुल्म करते थे गोरे भारी।
उनके जुल्मों से आतंकित थी तब जनता सारी।।
स्वामी जी ने आजादी का सबको पाठ पढ़ाया।
अंग्रेजों को मार भगाओ, सुखका मार्ग बताया।।
धीर-वीर, निर्भीक गुरु की, महानता पहचानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।
याद रखो, यदि देव दयानन्द, भारत में न आते।
वेद, शास्त्र, रामायण, गीता के पाठक मिट जाते।।
राम,कृष्ण के भक्त आर्यजन, दर-दर धक्के खाते।
ऋषियों के वंशज दुनिया में, ढूंढे से ना पाते।।
'नन्दलाल' ऋषि दयानन्द के गुणगाओ मर्दानो।
करो वेद प्रचार जगत में, भारत के विद्वानों।।

-नन्दलाल निर्भय, भजनोपदेशक; पलवल

संस्कृतम्

संस्कृत पाठ 1

प्रथम पाठ यानि की पहला पाठ। इस पाठ से आपका संस्कृत से पहली बार साक्षात्कार, भेंट होगी।

इस पाठ में मैं कुछ संस्कृत के वाक्य और उनका हिन्दी में अर्थ बताऊँगा। इन वाक्यों के माध्यम से आप संस्कृत के पहले शब्द सीखेंगे तो फिर बिना विलम्ब किए शुरुआत करते हैं।

संस्कृत वाक्य

संस्कृत और उनके हिन्दी समतुल्य वाक्यों को गौर से देखें और पढें।

संस्कृत + हिन्दी

१) अहं रुपा। मैं रुपा।। २) अहं चित्रा। मैं चित्रा।। ३) अहं गच्छामि।। मैं जाता हूँ।। ४) अहं खादामि। मैं खाता हूँ। ५) गच्छामि। मैं जाता हूँ। ६) खादामि।। मैं खाता हूँ।। ७) अहं वदामि। मैं बोलता हूँ। ८) अहं पठामि। मैं पढता हूँ।। ९) वदामि।। मैं बोलता हूँ।। १०) पठामि। मैं पढता हूँ।

अहम् या अहं

''अहम्'' या ''अहं'' संस्कृत में ''मैं'' के लिए प्रयोग किया जाता है। इसलिए ''अहं रूपा'' (वाक्य १)बन गया ''मैं रुपा'' और ''अहं चित्रा'' (वाक्य २) बन गया ''मैं चित्रा''।

गच्छामि

''मैं जाता हूँ'' गच्छामि अथवा अहं गच्छामि अर्थात् मैं जाता हूँ। अगर आप ध्यान से पढ़ रहे हैं तो आपने अवश्य सोचा होगा कि अगर गच्छामि का मतलब है तो अहं की जरुरत नहीं है तो आपने बिल्कुल सही सोचा है। अगर आप खाली गच्छामि बोलेंगे तो भी उसका अर्थ ''मैं जाता हूँ '' ही होगा। पर ऐसा क्यों? इसका विवरण अगले पाठों में होगा।

खादामि

खादामि अर्थात् मैं खाता हूँ। जैसे गच्छामि अथवा अहं गच्छामि अर्थात् मैं जाता हूँ वैसे ही खादामि अथवा अहं खादामि अर्थात् मैं खाता हूँ। तो यहाँ भी अहं की जरुरत नहीं है।

वदामि

वदामि अथवा अहं वदामि अर्थात् मैं बोलता हूँ।

पठामि

पठामि अथवा अहं पठामि अर्थात् मैं पढ़ता हूँ।

क्रमशः **-आचार्य संदीप कुमार उपाध्याय**

बोध कथा

धन-रूपी पहाड़ पर दान की वर्षा करो!

पाकिस्तान बनने से पूर्व एक दिन मैं मुलतान से आगे जा रहा था। डेरा इस्माईल खाँ पहुँचना था। दरिया से नौका में बैठकर नदी को पार करना था। गाड़ी जा रही थी बहुत तेज। तभी बहुत जोर से धक्का लगा। कई लोग अपनी सीटों से नीचे आ गिरे। गाड़ी रुक गई। गाड़ी रुकते ही कई लोग शोर मचाने लगे-टक्कर हो गई! मैं भी नीचे उतरा। इंजन की ओर चला यह देखने कि टक्कर किस वस्तु से हो गई है। कुछ लोग मुझसे पूर्व इंजन के पास हो आये थे। उनसे पूछा-''क्या हुआ?''

वे बोले-''रेल की लाइन पर पहाड़ आकर बैठ गया है।''

मैंने आश्चर्य से कहा-'' लाइन पर पहाड़ कैसे आकर बैठ गया है?''

उन्होंने कहा-''स्वयं जाकर देखो। रेत का पहाड़ रेल की पटड़ी पर बैठा है।''

मैंने वहाँ जाकर देखा कि वस्तुतः रेत का एक ऊँचा टीला पटड़ी के ऊपर है। चकित होकर मैंने कहा-''यह टीला पटड़ी के ऊपर आ गया है या कि पटड़ी नीचे चली गई है?''

वहाँ उस प्रदेश के लोग भी थे। उन्होंने कहा-''पटड़ी टीले के नहीं, टीला पटड़ी के ऊपर आ गया है। यह रेतीला प्रदेश है। तीव्र आँधी चलती है, तो रेत के पहाड़ उड़ने लगते हैं। उड़ते-उड़ते कभी-कभी पटड़ी के ऊपर आ बैठते हैं।''

मैंने पूछा-''क्या वर्ष-भर ये पर्वत इसी प्रकार उड़ते रहते हैं?''

उन्होंने बताया-''नहीं, जब वर्षा हो जाय, तब नहीं उड़ते। तब रेत भी नहीं उड़ती।''

उस समय मुझे शास्त्र की बात स्मरण आई कि यह धन-रूपी पहाड़ उड़नेवाला है; एक स्थान पर बहुत समय नहीं रहता। दान-रूपी वृष्टि इसपर हो जाय तो फिर नहीं उड़ता।

ओ धनिको! दान की वर्षा करो इस धन पर, नहीं तो स्मरण रखो कि यह पर्वत उड़कर कहीं अन्यत्र चला जायेगा। यह उड़नेवाला पर्वत है।

चिड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घट्यो नीर।

दान दिये धन 'न' घटे, कह गये दास कबीर।।

साभार : बोध कथाएं

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

गुरुकुल होशंगाबाद में नवीन प्रवेश प्रारंभ

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय होशंगाबाद (म.प्र.) में कक्षा छठवीं एवं सातवीं में योग्य विद्यार्थियों हेतु प्रवेश प्रारंभ हो चुके हैं। इच्छुक जन दिनांक 15 जून से 15 जुलाई 2016 के बीच में आने वाले प्रत्येक रविवार में मौखिक व लिखित परीक्षा दिलवाकर छात्रों को प्रवेश करवा सकते हैं। जानकारी हेतु निम्न नम्बरों पर सम्पर्क करें- 09907056726, 09424471288, 9827513029 **-प्रधानाचार्य**

वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भसंस्कार समारोह

आर्ष गुरुकुल महाविद्यालय आबूपर्वत, जि. सिरोही (राजस्थान) का 26वां वार्षिकोत्सव एवं वेदारम्भसंस्कार समारोह 28-30 मई 2016 को आयोजित किया जा रहा है। इस अवसर पर श्री कमलेश कुमार शास्त्री एवं आचार्य ओम प्रकाश आर्य जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ होगा। गुरुकुल में प्रवेश के लिए छात्र अपने अभिभावकों के साथ 28 मई को पहुंचे।**-स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, अध्यक्ष**

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद का वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह

भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद का वार्षिकोत्सव एवं सम्मान समारोह 8 से 10 जुलाई को आर्य समाज बड़ा बाजार, कोलकाता में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर पं. खेमसिंह आर्य, पलवल, एंव पं. बृजपाल 'कर्मठ' मुजफफर नगर का सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाएगा।

खेद व्यक्त खेद है कि आर्य सन्देश के अंक 21 दिनांक 28 मार्च से 3 अप्रैल 2016 के अंक में पृष्ठ 5 पर प्रकाशित लेख जो कि पंडित लेखराम जी के संबंध में प्रकाशित किया गया था। यह लेख विकीपीडिया से लिया गया था। इस लेख में पंडित लेख राम जी की मृत्यु की तिथि 3 मार्च 1897 ईद का दिन लिखा गया है। जो कि वास्तव में 6 मार्च 1897 है, जो कि ईद का दिन नहीं था। इस भूल के लिए सम्पादक मंडल खेद प्रकट करता है तथा श्री लक्ष्मण जी का धन्यवाद करता है जिन्होंने इस भूल की ओर हमारा ध्यान दिलाया। **सम्पादक**

आर्य समाज नत्थनपुर, देहरादून का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज नत्थनपुर, देहरादून का वार्षिकोत्सव 30 अप्रैल 2016 को धूम-धाम के साथ सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में आर्य समाज नत्थनपुरा के विद्वान श्री उम्मेद सिंह विशारद, द्रोणस्थली कन्या गुरुकुल और मानव कल्याण केन्द्र के संस्थापक डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता और वैदिक साधन आश्रम तपोवन के मन्त्री श्री इ. प्रेम प्रकाश शर्मा एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति सम्मिलित थे।

-मनमोहन कुमार आर्य

बंगाल में पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज कलकत्ता, 12 विधान सरणी में बंगाल के दूर-दूरान्त स्थित गांवों में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार तथा वैदिक यज्ञ, योग, संस्कार, वेदपाठ संस्कृत-शिक्षण हेतु पं ओम प्रकाश विद्याचस्पति स्मृति द्वितीय आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन आगामी 21 मई से 5 जून 2016 तक बड़े उत्साह के साथ स्थानीय विशिष्ट समाजों के सहयोग से किया जा रहा है।

पं. वेद प्रकाश शास्त्री (1007076811)

पं. अर्चना शास्त्री (1434236432)

सार्वदेशिक आर्य वीर दल का राष्ट्रीय शिविर

स्थान : एस.एम.आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग पश्चिम, नई दिल्ली-26

उद्घाटन	समापन
6 जून सायं 5 बजे	19 जून प्रातः 10 बजे से

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में सार्वदेशिक आर्य वीर दल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय शिविर में शाखानायक, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक श्रेणी के शारीरिक एवं बौद्धिक पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण योग्य शिक्षकों द्वारा दिया जायेगा। शिविर में दशम कक्षा उत्तीर्य आर्य वीर ही प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

प्रवेश शुल्कः शाखानायक 300/-, उपव्यायाम शिक्षक, व्यायाम शिक्षक 500/- शिविरार्थी को पाठ्य पुस्तकें शिविर की ओर से दी जायेंगी। **आवश्यक सामान :** गणवेश-खाकी हाफ पैण्ट, सफेद सैण्डो बनियान, सफेद जूते, सफेद मोजे, लंगोट, लाठी, नोटबुक, हल्का बिस्तर, थाली, चम्मच, गिलास एवं अन्य दैनिक उपयोगी सामान। **नोट :** शिविरार्थी स्थानीय आर्य समाज या आर्य वीर दल के अधिकारी का संस्तुति पत्र अथवा आर्य वीर दल के प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र और अपने दो चित्र साथ लाएं। शिविर में उन्हें ही प्रवेश दिया जायेगा जो आर्य वीर दल की शाखा में जाते हैं अथवा जिन्होंने आर्य वीर प्रथम श्रेणी का प्रशिक्षण प्राप्त किया है।

-: निवेदक :-

धर्मपाल आर्य	जगबीर आर्य	सत्यवीर आर्य	स्वामी देवव्रत	सत्यानन्द आर्य	अरविन्द नागपाल
प्रधान	संचालक	महामन्त्री	प्र. संचालक	प्रधान	प्रबन्धक
दि.आ.प्र.सभा	आ.वी.द. दिल्ली	सार्वदेशिक आर्य वीर दल		एस. एम. आर्य पब्लिक स्कूल	

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का शिविर जम्मू में दिनांक 5 जून से 12 जून 2016

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का वार्षिक राष्ट्रीय शिविर इस बार जम्मू शहर में 5 से 12 जून 2016 तक लगाया जाएगा। इसमें भाग लेने के लिए 14 वर्ष से अधिक आयु की वे वीरांगनाएं जिन्होंने पहले भी कम-से-कम दो शिविरों में भाग लिया हो, आ सकती हैं। दिनांक 15 मई 2016 तक अपने नाम निम्नलिखित नम्बरों पर दे दें ताकि व्यवस्था सुचारु रूप से हो सके।

साध्वी डॉ. उत्तमा यति	मृदुला चौहान	आरती खुराना	विमला मलिक
प्रधान संचालिका	संचालिका	सचिव	कोषाध्यक्षा
96722-86863	98107-02760	99102-34595	98102-74318

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रान्तीय प्रशिक्षण शिविर दिनांक 22 से 29 मई 2016

आर्य वीरांगना दल दिल्ली प्रदेश के तत्त्वावधान में चरित्र निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण शिविर हंसराज मॉडल स्कूल पंजाबी बाग, नई दिल्ली में 22 से 29 मई, 2016 तक लगाया जाएगा। आप समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपने यहां आने वाली वीरांगनाओं को तथा अपने परिवार की बच्चियों को भाग लेने के लिए अवश्य भेजें। सम्पर्क करें- *ब्र. सुमेधा आर्या* *श्रीमती शारदा आर्या, संचालिका मो. 9971447372*

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में

35वां वैचारिक क्रान्ति शिविर

19 मई, 2016 से 29 मई, 2016

उद्घाटन समारोह	समापन समारोह
22 मई प्रातः 10 बजे	29 मई प्रातः 10 बजे

स्थान : आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली-110034

आर्यजन दोनों कार्यक्रमों में अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें।

निवेदक	महाशय धर्मपाल	धर्मपाल गुप्ता	जोगेन्द्र खट्टर	योगेश आर्य
	प्रधान	व.उ. प्रधान	महामन्त्री (9810040982)	कोषाध्यक्ष

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में

सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर

30 मई से 5 जून 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं गुरुकुल पौंधा देहरादून के संयुक्त तत्त्वावधान में पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी सत्यार्थ प्रकाश स्वाध्याय शिविर इस वर्ष भी आयोजित किया जा रहा है। जाने वाले शिविरार्थी 29 मई सायं 9 बजे आई.एस.बी.टी. कश्मीरी गेट दिल्ली से प्रस्थान करेंगे तथा 5 जून 2016 को सायं 3 बजे दिल्ली के लिए वापस रवाना होंगे। जो शिविरार्थी ट्रेन से जाना चाहें अपनी सुविधानुसार रेलवे आरक्षण स्वयं करवा लें। शिविर शुल्क प्रति शिविरार्थी 1100/- देय होगा। जिसमें आने-जाने का मार्ग व्यय (सामान्य बस द्वारा) सम्मिलित है। शिविर में जाने वाले शिविरार्थी अपना शुल्क यथाशीघ्र सभा कार्यालय 15 हनुमान रोड, दिल्ली-01 में जमा करवा दें। *- सुखवीर सिंह आर्य, संयोजक, मो. 09540012175, 09350502175*

पृष्ठ 1 का शेष **विश्व पर्यावरण दिवस ...**

जा सकेगा।

इस वर्ष आर्य समाज जहांगीरपुरी, आर्य समाज हौज खास, आर्य समाज दुर्गा पार्क, आर्य समाज किरण गार्डन, आर्य समाज विकास नगर के भवन निर्माण करने के प्रयास किए जाएंगे। ये उपरोक्त सभी निर्णय एवं प्रस्ताव दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक दिनांक 8 मई 2016 में पारित किए गए। बैठक में बताया गया कि आर्य समाज स्थापना दिवस के अवसर पर प्रस्ताव किया गया था कि आर्य समाज की ओर से वैदिक संस्कारों में से एक अंतिम संस्कार को वैदिक रीति से कराने की प्रेरणा की जाएगी। बैठक में इसी प्रस्ताव को निर्णय के रूप में पारित करते हुए सभी सदस्यों एवं आर्य समाजों के सदस्यों से निवेदन किया गया कि वे किसी भी पार्थिव शरीर पर शॉल/चादर आदि ओढ़ाने के स्थान पर घी एवं हवन सामग्री प्रदान करें एवं अन्य को भी ऐसी प्रेरणा करें। इसी कार्य से जहां एक ओर वायु मंडल में सुगंधि होगी वहां प्रदूषण में कमी भी आएगी। बैठक में यज्ञ मेले (यज्ञोत्सव) का आयोजन दिनांक 2 अक्टूबर 2016 को करने का निश्चय भी किया गया।

पूर्वी दिल्ली आर्य वीर दल एवं आर्य वीरांगना प्रशिक्षण शिविर दिल्ली

स्थानः रतनदेवी आर्य कन्या सी.सै. स्कूल, कृष्ण नगर, दिल्ली-110051

आर्य वीर दल	आर्य वीरांगना दल
23 से 30 मई, 2016	15 से 22 मई, 2016

निवेदन है कि अपने आर्य समाज/विद्यालय तथा अपने परिवार के बच्चे/बच्चियों को भाग लेने के लिए अवश्य भेंजे। **-सुरेन्द्र कुमार रैली (9810855695)**

शोक समाचार

आचार्य गवेन्द्र शास्त्री को पितृ शोक

आर्य समाज राजेन्द्र नगर के धर्माचार्य आचार्य गवेन्द्र शास्त्री जी के पूज्य पिता श्री किशोरी लाल जी का निधन हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। 7 मई को आयोजित शोक सभा में दिल्ली की विभिन्न आर्य समाजों के पदाधिकारियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्रीमती ऊषा लखनपाल का निधन

आर्य समाज ग्रेटर कैलाश पार्ट 1, नई दिल्ली-48 के मंत्री श्री विजय किशन लखनपाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती ऊषा लखनपाल का 8 मई 2016 को निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार उसी दिन पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न कराया गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं। उनकी स्मृति में शांति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा बुधवार 11 मई को सम्पन्न हुई जिसमें सभा अधिकारियों के साथ-साथ दक्षिण दिल्ली की अनेक आर्य समाजों के अधिकारियों एवं सदस्यों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

श्री हरपाल सिंह आर्य का निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उप प्रधान श्री हरपाल सिंह आर्य का 10 मई 2016 को आकस्मिक निधन हो गया। उनकी स्मृति में शोक सभा 12 मई को सम्पन्न हुई।

आर्य समाज यमुना नगर के संस्थापक श्री केशव दास जी का निधन

जगाधरी वर्कशाप जिला यमुना नगर आर्य समाज के संस्थापक एवं मंत्री श्री केशव दास आर्य का 87 वर्ष की अवस्था में देहान्त हो गया। वे सिद्धान्तनिष्ठ वैदिक विद्वान् थे। शोक सभा में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल श्री देवव्रत व वैदिक मिशनरी पं. इन्द्रजीत देव ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

श्रीमती चांदकौर जी का निधन

आर्य समाज पानीपत सैक्टर 11-12 के प्रधान श्री सुरेश मलिक जी की पूज्य माता जी श्रीमती चांदकौर जी का 59 वर्ष की आयु में 6 मई 2016 की प्रातः काल निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ गांव रिसाला में किया गया। वे अपने पीछे अपने पति एवं पुत्र-पुत्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 16 मई को उनके निवास पर सम्पन्न होगी।

श्री साधू सिंह जी का आकस्मिक निधन

आर्य युवा जागृति संस्थान, जिला-एटा, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष एवं ग्राम प्रधान-हिम्मतपुर काकामई, जनपद- एटा, उत्तर प्रदेश श्री प्रदीप कुमार जी के ताऊ जी श्री साधू सिंह जी का दिनांक 27 अप्रैल 2016 को दोपहर 3 बजे आकस्मिक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार वैदिक विद्वान आचार्य जयप्रकाश शास्त्री जी एवं आचार्य यशपाल शास्त्री जी ने पूर्ण वैदिक रीति से संपन्न कराया। उनकी श्रद्धांजलि सभा 28 अप्रैल 2016 को उनके पैतृक गांव हिम्मतपुर काकामई, एटा में संपन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

9 मई 2016 से 15 मई, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 12 मई 2016/ 13 मई, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 11 मई, 2016

प्रतिष्ठा में,

स्वास्थ्य चर्चा

गर्मी के मौसम में शरीर में विभिन्न रोग उत्पन्न हो जाते हैं जिनसे छुटकारा पाने के लिए प्रस्तुत हैं कुछ घरेलू उपाय

शरीर के सभी रोगों में

1. सतावर, गोखरू, बाराहीकंद, तिल 40-40 ग्राम चीते की छाल 25 ग्राम, काली मिर्च, पीपल 20-20 ग्राम सतगिलोए 10 ग्राम शुद्ध मिला कर 15 ग्राम मिश्री और शहद 100-100 ग्राम घी 50 ग्राम मिला लें। एक-एक चम्मच प्रात:-सायं गर्म पानी से लें।

2. बरगद की कोपल, फल, जटा, छाल 10-10 ग्राम कूट छानकर बरगद का दूध 10 ग्राम करेले, काक पानी 20 ग्राम मिला लें फर इसकी चने के बराबर गोलियां बना छाया में सुखा एक-एक गोली प्रात: रात्रि में पानी से लें।

3. उशीर, कालाअगर, चंदन, तेजपात, नेत्र वाला 5-5 ग्राम कूट छान लें। नहाने के बाद इस दवा को पानी में पीसकर शरीर में लगाएं। शरीर से सुगंध आएगी।

4. पीपल, सैंधा नमक, बनसलोचन 20-20 ग्राम कूट छानकर 5 ग्राम प्रात: शहद में मिलाकर लें।

5. आमला, हरड का छिलका 50-50 ग्राम कूट छानकर इसमें 100 ग्राम खांड मिला लें। फिर प्रात: खाली पेट 10 ग्राम पानी से लें।

साभार : चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद

वैद्य खेम भाई द्वारा रचित 'चिकित्सा सम्राट आयुर्वेद' पुस्तक वैदिक प्रकाशन में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति के लिए अपना आदेश मो. 09540040339 पर या सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय 15 हनुमान रोड दिल्ली-110001 के पते पर भेज सकते हैं।

आकर्षक वैदिक शगुन लिफाफे

नये डिज़ाइनों में उपलब्ध

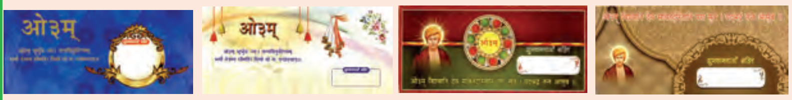

बिना सिक्के वाला 300/- रुपये सैकड़ा | सिक्के वाला 500/- रुपये सैकड़ा

प्राप्ति स्थान:

वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

15 हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001

मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें

विशेष सूचना

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की महत्वाकांक्षी योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साहपूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए श्री सत्यप्रकाश जी से मो. 9650183335 पर सम्पर्क करें।

चुनाव समाचार

आर्य समाज मयूर विहार फेस-2 दिल्ली

प्रधान - **श्री हरवंश लाल शर्मा**
मंत्री - **श्री ओम प्रकाश पाण्डेय**
कोषाध्यक्ष - **श्री लक्ष्मी चन्द गुप्ता**

आर्य समाज अशोक विहार-1, एफ-ब्लॉक विहार, फेज-1, दिल्ली-110052

प्रधान - **श्री प्रेम कुमार सचदेवा**
मंत्री - **श्री जीवनलाल आर्य**
कोषाध्यक्ष - **श्री सतीश चन्द्र सैनी**

वधू चाहिए

30 वर्षीय आर्य युवक लम्बाई 5'10'' डबल एम.ए., पी.एच-डी. मुम्बई में योग अध्यापक वार्षिक आय 8 लाख, एवं 26 वर्षीय आर्य युवक लम्बाई 5'8'', डबल एम.ए.,एम. एड. , मुम्बई में योग अध्यापक वार्षिक आय 8 लाख। दोनों युवकों हेतु लिए आर्य विचारधारा वाली पारिवारिक कन्याएं चाहिए। सम्पर्क करें - श्री राम मूर्ति आर्य, आर्य रेलवे क्रासिंग मालीपुर, अम्बेडकर नगर(उ.प्र.)

मो. 09415535059, 07666666991

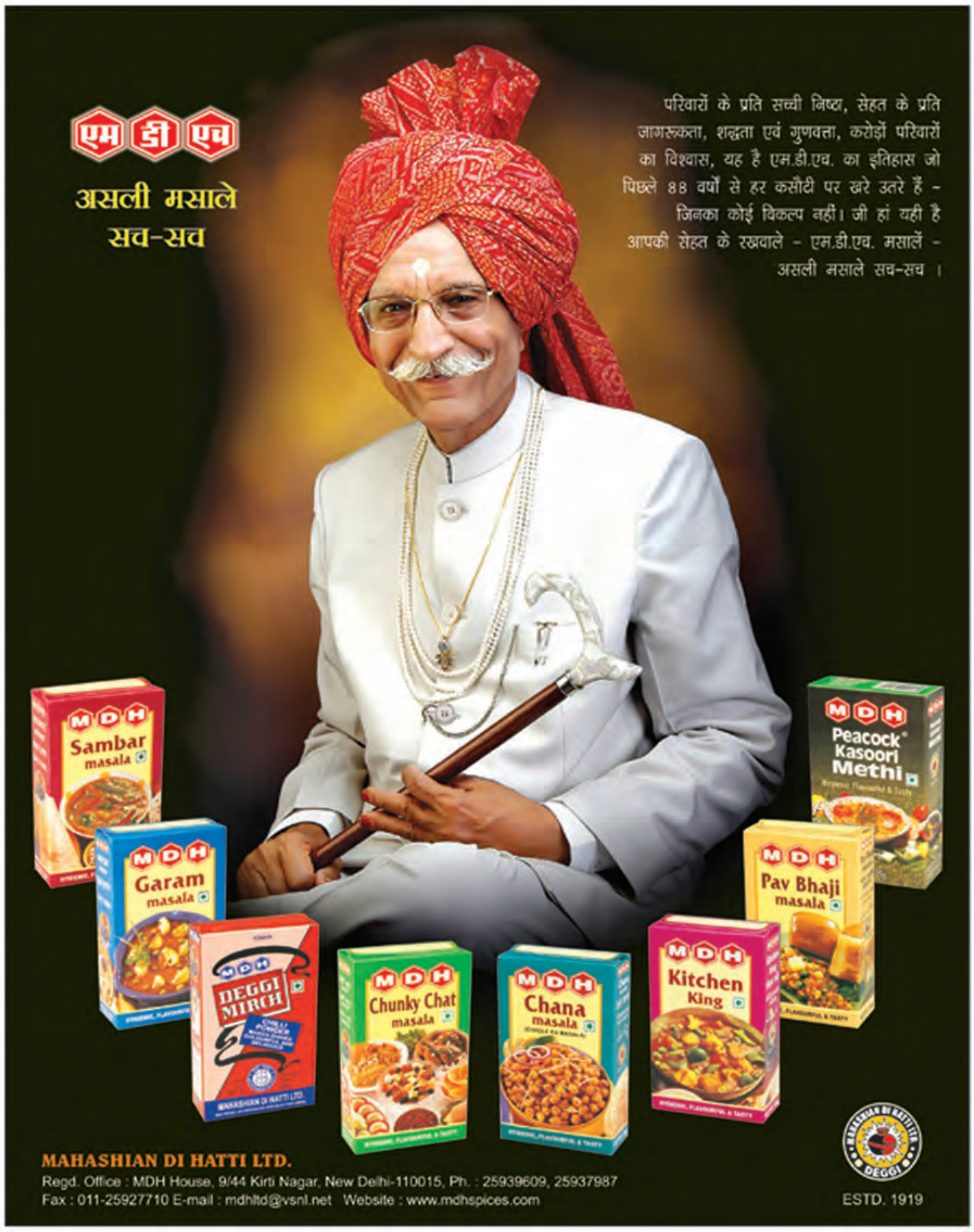

साप्ताहिक आर्य सन्देश में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धांतिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह